चाङ श्येनल्याङ

(१९३६ -   )

चाङ श्येनल्याङ का जन्म १९३६ में नानचिङ में हुआ था। १९५५ में पेइचिङ से सीनियर मिडिल स्कूल से स्नातक होने के बाद उन्होंने कानसू प्रांतीय पार्टी कमेटी के कार्यकर्ता विद्यालय में शिक्षक की नौकरी की। १९५८ में उन्हें निङश्या के एक फार्म में शारीरिक श्रम के लिए भेजा गया। १९७९ में उन्हें **श्वो फ़ाङ** पत्रिका का संपादन भार सौंपा गया। इसके अगले वर्ष उन्होंने चीनी लेखक संघ की सदस्यता ली और उन्हें निङश्या लेखक परिषद का निदेशक चुना गया।

छठे दशक में उनकी साठ से अधिक लघु कविताएं प्रकाशित हुईं, पर उसके बाद लंबे समय तक उनकी कोई भी रचना प्रकाश में नहीं आई। इधर १९७९ के बाद वह लगातार लिख रहे हैं। उनकी इधर की रचनाओं में "बूढ़े शिङ और उनके कुत्ते की कहानी" तथा "काल कोठरी में प्रेमालाप" लघु उपन्यास की विशेष चर्चा हुई।

"देह और आत्मा" कहानी पर "घोड़ों का चरवाहा" फिल्म बन चुकी है।

देह और आत्मा

चाङ श्येनल्याङ

वह धनी मां-बाप का परित्यक्त बेटा था...

— विक्टर ह्यूगो ***लेस मिजरेबल***

१

श्वी लिङच्युन ने उम्मीद नहीं की थी कि पिता से फिर मुलाकात होगी।

एक आलीशान होटल की सातवीं मंजिल के सजे-संवरे कमरे में वे मिले थे। खिड़की के बाहर खुला आकाश था, आकाश में रुई के फाहों जैसी बादलों की कुछ धारियां थीं... । सुदूर पीली मिट्टी के पठार पर उसके फार्म की झोपड़ी की खिड़की से विस्तृत मगर सघन हरियाली दिखती थी। शहर आने के बाद से ही वह अनमना महसूस कर रहा था, मानो ऊंचे बादलों के अचानक विस्फोट की चपेट में आ गया हो। पिता के पाइप से निकल रहा कोहरेनुमा नीला धुआं कमरे में फैल रहा था, कमरे की हर चीज उसे पहले से ही अवास्तविक लग रही थी। उसके पिता अभी भी उसी रेड इंडियन प्रधान की आकृति वाले मार्के की थैली का तंबाकू पी रहे थे; बचपन में भी उसने कई बार इस तंबाकू के काफी के स्वाद की भीनी मीठी खुशबू महसूस की थी, बचपन की वही परिचित खुशबू इस बात का प्रमाण थी कि यह घटना स्वप्न नहीं, यथार्थ है।

''बीती बातों को भूल जाना ही बेहतर है,'' उसके पिता ने हाथों के झटके से संकेत किया। चौथे दशक में हार्वर्ड से बी.ए. करने के बाद से ही उन्होंने कैम्ब्रिज के दिनों में प्राप्त गरिमा बनाए रखी थी। उन्होंने कीमती पश्चिमी सूट पहन रखा था और सोफे पर बैठे हुए थे।

''मुख्यभूमि पहुंचने के साथ ही मैं 'आंखें सीधी रखो' कहावत का मतलब समझ गया था। अच्छा होगा कि तुम स्वयं को समझाओ और विदेश में जाने की तैयारी करो।''

कमरे की सजावट और उसके पिता के कपड़ों ने बीते दिनों की याद दिला दी। वह विचित्र भावनाओं से भर गया। उसने सोचा सचमुच बीती बातों को भूल जाना ही बेहतर है! पर वह कैसे अपने अतीत को भुला दे?

शरद मौसम के ऐसे ही एक दिन, आज से तीस वर्ष पहले, वह श्याफेइ मार्ग पर अपने पिता का आवास ढूंढ़ने की कोशिश कर रहा था। उसके हाथ में मां का लिखा पता था। संयोग से उसे पिता का आवास मिल गया था; वही बगीचा, वही इमारत। बारिश थम गई

थी और पेड़ों के झरते पत्ते विवर्ण और बेजान लग रहे थे। दीवारों के ऊपर कंटीले तार लगे थे। गेट के लोहे के दरवाजे पर धूसर रंग की वार्निश लगी हुई थी। उसने दीवार में लगी घंटी का बटन दबाया। थोड़ी देर बाद लोहे के दरवाजे की छोटी खिड़की खुली थी और उस नौकर का चेहरा दिखा था, जो उसके पिता का पत्र लाया करता था। नौकर ने उसे अंदर जाने दिया। वे पेड़ों से आच्छादित पगडंडी से होकर दोमंजिली इमारत में गए थे।

तीस वर्ष पहले उसके पिता अधिक जवान लगे थे। उन्होंने मटमैला स्वेटर पहन रखा था और उनकी बांह अंगीठी के ऊपरी ढांचे पर टिकी थी। वह तंबाकू पी रहे थे। उनके सामने सोफे पर वही औरत बैठी थी, जिसे लिङच्युन की मां प्रतिदिन गालियां दिया करती थी।

उसने कहा, "तो यह तुम्हारा बेटा है। यह बिलकुल तुम्हारी तरह लगता है। बेटे, इधर आओ।"

लिङच्युन आगे नहीं बढ़ा, उसने वहीं से उस महिला को घूरकर देखा। उसे आज भी उसकी चमकदार आंखें और रंगे होंठ याद हैं।

पिता ने अपना सिर उठाया, "क्या बात है?"

"मां बीमार है और उसने आपको बुलाया है।"

"वह हमेशा बीमार रहती है, हमेशा..." उसके पिता लंबे कदमों से आगे बढ़े और बेचैनी में कालीन पर टहलने लगे। कालीन हरे रंग की थी और उसमें सफेद रंग के धागों से बुनाई की गई थी। लिङच्युन पिता के पीछे चलता हुआ बड़ी मुश्किल से अपने आंसुओं को रोक पाया था।

"अपनी मां से कहना कि मैं थोड़ी देर में आऊंगा।" उसके पिता ने उससे कहा। उसे मालूम था कि यह कोरी बात है और उसकी मां फोन पर कितनी ही बार यह सुन चुकी है।

नम्र और झिझकती आवाज में लिङच्युन ने जिद्द की, "मां ने अभी आपको घर बुलाया है।"

"मैं जानता हूं, जानता हूं..." लिङच्युन के कंधे पर हाथ रखकर उसके पिता उसे दरवाजे तक लाए। "तुम आगे चलो और मेरी कार लेते जाओ। यदि तुम्हारी मां की बीमारी गंभीर है तो उनसे सीधे अस्पताल जाने के लिए कहना।" उसके पिता उसे बरसाती तक छोड़ने आए, वहां आकर उन्होंने उसके बालों को अचानक सहलाया। उन्होंने झिझकते हुए कहा, "काश, तुम थोड़े बड़े होते, तुम... समझ जाते... तुम्हारी मां... उसके साथ जीना... मुश्किल है। वह ऐसी... ऐसी..." लिङच्युन ने अपने पिता को देखा। वह अपनी उंगलियों से अपनी भौंह मसल रहे थे। पिता की तकलीफ देखकर उसे पिता से सहानुभूति हुई।

पर पिता की बंद मोटरगाड़ी में बैठकर लिङच्युन जब फ्रांसीसी कॉलोनी की पीले पत्तों से ढकी गलियों से गुजर रहा था तो उसकी आंखें भर आईं। वह शर्म, दुख और अकेलेपन के भाव से भर गया। जब वह स्वयं इतना उदास है तो वह दूसरों के लिए क्यों दुखी हो? उसे मां का पूरा प्यार नहीं मिला था, उसकी मां उसके बालों को सहलाने या चूमने से अधिक माजोंग (चीन का एक प्रकार का खेल) की गोटियों को सहलाना या चूमना अधिक पसंद करती थी। न ही उसे पिता का प्यार मिला था। पिता काम से घर लौटने के बाद उदास, दुखी और चिढ़े रहते थे और मां से उनका अविराम झगड़ा तो होता ही था। उसके पिता ने कहा

कि यदि वह थोड़ा बड़ा होता तो सारी बातें समझ सकता... पर वास्तव में ग्यारह वर्ष की इस छोटी उम्र में ही वह बहुत कुछ समझने लगा था। मां को सबसे अधिक पिता के कोमल व्यवहार और प्यार की जरूरत थी और पिता बेढब और सनकी पत्नी से पीछा छुड़ाना चाहते थे। पर न तो पिता और न मां का ही उसके लिए कोई महत्व था। वह अमेरिका से पढ़कर लौटे लड़के और जमींदार की बेटी की पारंपरिक शादी की पैदाइश के अलावा कुछ और नहीं था।

वही हुआ, उसके पिता घर नहीं लौटे। और जैसे ही उसकी मां को पता चला कि पिता अपनी रखैल के साथ मुख्यभूमि छोड़कर चले गए, उसके कुछ ही दिनों के बाद एक जर्मन अस्पताल में उसकी मां की मृत्यु हो गई।

ठीक उसी समय मुक्ति सेना ने शाङहाए में प्रवेश किया था...।

और अब तीस वर्षों के बाद किसी भी अन्य दुर्भाग्य से बड़े दुर्भाग्य की तरह उसके पिता अचानक लौट आए थे और उसे अपने साथ देश से बाहर ले जाना चाहते थे। सारा मामला इतना अपरिचित था कि लिङच्युन को विश्वास नहीं हो रहा था कि उसके सामने बैठा आदमी उसका पिता है और वह उसका बेटा है।

उसके पिता की सेक्रेटरी सुङ ने वार्डरोब खोलकर उसके पिता के पहनने के कपड़े निकाले, वार्डरोब के अंदर छोटे-बड़े कई सूटकेस पड़े थे, जिन पर लॉस एंजेल्स, तोकियो, बैंङकाक, हॉङकाङ के होटलों के रंगीन स्टिकर लगे हुए थे। "पान अमरीकन बोइंग-७४७" का अंडाकार टैग भी साफ दिख रहा था। छोटे वार्डरोब में पूरी दुनिया समायी हुई थी। लिङच्युन को अभी तीन दिन पहले ही चाइना ट्रैवल सर्विस से जारी यात्रा सूचना स्थानीय अधिकारियों से मिली थी। दो दिन और दो रात तो बस और ट्रेन में धक्के खाते बीते, तब जाकर वह यहां पहुंचा था।

लिङच्युन ने अपना कृत्रिम चमड़े का सूटकेस सोफे के कोने में रखा था। फार्म पर ऐसा सूटकेस "पश्चिमी ढंग का सामान" माना जाता था, पर इस कमरे में घुसने के साथ ही उसे लगा था कि सूटकेस शर्म से सिकुड़ गया है। सूटकेस से नाइलॉन के धागों की एक थैली बंधी थी, जिसमें टूथपेस्ट और ब्रश के अलावा रास्ते के बचे चाय में उबले अंडे थे। अंडे उबलने से फट गए थे, उन्हें देखते हुए उसे पत्नी की बात याद आई; चलते समय उसने कहा था कि इसमें से कुछ अंडे अपने पिता को देना।

दो दिन पहले उसकी पत्नी श्यूचि जिद्द करके छिङछिङ के साथ काउंटी केंद्र के बस स्टेशन उसे छोड़ने आई थी। लिङच्युन शादी के बाद फार्म से कहीं नहीं गया था, इसलिए यह लंबी यात्रा उस छोटे परिवार के लिए एक बड़ी घटना बन गई थी।

"पापा, पेइचिङ कहां है?"

"पेइचिंग यहां से उत्तरपूर्व में है।"

"क्या पेइचिङ अपनी काउंटी केंद्र से बहुत बड़ा है?"

"हां, बहुत बड़ा है।"

"क्या वहां तारा फूल है?"

"नहीं।"

"क्या वहां बेर हैं?"

"नहीं।"

"फिर..." छिङछिङ ने किसी बड़े व्यक्ति की तरह उसांस ली, अपनी हथेली पर ठोड़ी रखे हुए वह बहुत निराश लगी। उसकी सोच के अनुसार अच्छी जगह का मतलब वहां तारा फूल और बेर का होना है।

"मूर्ख लड़की, पेइचिङ एक बड़ा शहर है," कोचवान बूढ़े चाओ ने कहा और चिढ़ाया, "तुम्हारे पापा इस बार लम्बी यात्रा पर जा रहे हैं। तुम भी बहुत जल्दी अपने दादा के साथ विदेश जाओगी। हैं न, प्रशिक्षक श्वी?"

कोचवान की बात पर उसके पीछे बैठी श्यूचि मुस्कराई। उसने कुछ नहीं कहा, पर उसकी मुस्कराहट विश्वास और निष्ठा व्यक्त कर रही थी। वह ठीक वैसे ही लिङच्युन के विदेश जाने की कल्पना नहीं कर पा रही थी, जैसे बेटी छिङछिङ यह नहीं समझ पा रही थी कि पेइचिङ कितना बड़ा है।

देहात की टेढ़ी-मेढ़ी ऊबड़-खाबड़ सड़क पर घोड़े की दुलकी चाल से वे झटके खा रहे थे। सड़क की बायीं तरफ आयताकार खेत फैले हुए थे, दाहिनी तरफ दूर तक फैला चरागाह था, जहां कभी उसने घोड़ों को चराया था। ऐसा लगा कि इस इलाके में कोई चुंबकीय आकर्षण है। हर एक झाड़ी और पेड़ यादों के प्रवाह को गति दे रहा था। लिङच्युन ने अचानक अपने देहात के प्रति अधिक सहानुभूति महसूस की।

वे सफेद पॉपलर पेड़ के पास पहुंचे, सफेद पॉपलर के तीन पेड़ों के पास बेर के पेड़ थे। वह घोड़ागाड़ी से उतरा और बेर की एक टहनी तोड़ लाया, तीनों घोड़ागाड़ी में बैठे बेर खाने लगे। यह जंगली बेर उत्तरपश्चिम चीन का खास फल था; यह अपने खट्टे, कड़वे व हल्के मीठे स्वाद के लिए प्रसिद्ध था। १९६० के अकाल में वह इन्हीं बेरों के सहारे जिंदा रहा था। वर्षों से उसे बेर खाने का दोबारा मौका नहीं मिला था, आज फिर से बेर खाने पर उसके स्वाद ने उसे और भावुक बना दिया। छिङछिङ का सवाल उसकी समझ में आ गया, वह क्यों पूछ रही थी पेइचिङ में बेर हैं या नहीं?

बेर की गुठली मुंह से फेंकते हुए श्यूचि ने कहा, "निश्चित ही छिङछिङ के दादा ने कभी बेर नहीं खाए होंगे।" विदेश से आए अपने ससुर के बारे में उसने सबसे बड़ी यही कल्पना की।

उसे अधिक सोचने की जरूरत भी नहीं थी—बाप-बेटे का चेहरा इतना मिलता था कि वह राह चलते अपने ससुर को पहचान सकती थी। दोनों की आंखें सिकुड़ी और लंबी थीं, नाक सीधी और मुंह बड़ा था। उन्हें देखकर कोई भी आसानी से कह सकता था कि दोनों में आनुवंशिकी समानता थी, दोनों के आचरण और हाव-भाव भी समान थे।

पिता के चेहरे पर बुढ़ापे का असर नहीं पड़ा था। उनका रंग भी बेटे जैसा गहरा था। यह हॉङकॉङ या लॉस एंजेल्स के समुद्र तट पर धूप सेंकने का प्रभाव था। उनका रंग अभी तक फीका नहीं पड़ा था। हालांकि उनके अधिकांश बाल सफेद हो गए थे, पर वह उनकी पूरी देखभाल करते थे। उनके हाथों पर बुढ़ापे की झुर्रियां पड़ गई थीं, पर उनके नाखून हमेशा कटे-संवरे रहते थे।

कॉफी की मेज पर उत्कृष्ट चाइना कॉफी सेट के अलावा "३-बी" मार्का पाइप, मोरक्को

की बनी तंबाकू रखने की चमड़े की थैली, सोने का पॉलिश किया लाइटर और हीरा जड़ा टाई पिन पड़ा था।

सचमुच, भला कैसे उन्होंने कभी बेर खाए होंगे?

२

"ओ, यहां भी आप ताजा लोकप्रिय गीत सुन सकते हैं," सेक्रेटरी सुङ ने धाराप्रवाह चीनी में कहा। उसकी लंबी और हृष्ट-पुष्ट आकृति से चमेली की खुशबू आई। उसने बालों में सिल्क का बैंगनी रिबन बांध रखा था। उसके लंबे बालों का गुच्छा लहराने पर घोड़े की पूंछ की तरह लगा। "चेयरमैन साहब, पेइचिङ में भी लोग डिस्को की धुन पर थिरकने लगे हैं और वे हॉङकॉङ के लोगों से बेहतर नृत्य करते हैं। यहां भी आधुनिकता आ गई है!"

"कोई भी आनंददायक प्रलोभन का प्रतिरोध नहीं कर सकता।" लिङच्युन के पिता ने किसी मानव के मिथ्याभिमान को समझने वाले दार्शनिक की तरह मुस्कराकर कहा, "अब वे भी स्वयं को तपस्वी नहीं मानते।"

शाम का खाना खाने के बाद उसके पिता और सेक्रेटरी सुङ उसे डांस हॉल में ले गए। वह नहीं जानता था कि पेइचिङ में ऐसी भी जगह है। वह बचपन में अपने माता-पिता के साथ शाङहाए के "सौ आनंद का द्वार" और "फ्रेंच इवनिंग क्लब" जैसे नाइट क्लबों में जा चुका था, आज उसे लगा कि वह फिर से उन पुराने अड्डों पर आ गया है। हल्की रोशनी में स्त्रैण पुरुषों और पुरुष सदृश्य औरतों का थिरकना देखकर उसे लगा कि जैसे चांदनी रात में प्रेतात्माएं विचर रही हों। थोड़ी ही देर में उसे बेचैनी महसूस होने लगी। उसे लग रहा था कि अभिनय करना न आने के बावजूद जैसे उसे मंच पर किसी अन्य अभिनेता के बदले में भेज दिया गया हो।

थोड़ी देर पहले भोजनालय में वह घृणा से कांप उठा था। अनेक प्रकार के व्यंजन आए और उन्हें उलट-पुलटकर बगैर खाए ही रसोईघर में वापस भेज दिया गया। उसकी काउंटी में राज्य द्वारा संचालित भोजनालय से हर व्यक्ति इसलिए बचा हुआ भोजन टिफिन भर कर घर ले जाता है कि बचा हुआ भोजन फेंकना न पड़े।

डांस हॉल में हर नई धुन बजने के साथ अनेक जोड़े बेढब नृत्य कर रहे थे। एक-दूसरे को आलिंगन में लेने के बजाए वे आमने-सामने खड़े होकर लड़नेवाले मुर्गों की तरह आगे बढ़ते और पीछे हटते थे। तो इस तरह ये लोग अपनी अतिरिक्त ऊर्जा का निष्कासन करते हैं। उसने उन लोगों के बारे में सोचा, जो इस क्षण गर्म खेतों में धान काटने में लगे होंगे। अपने शरीर को आगे झुकाकर वे हाथों को हिलाते हुए पल में दाहिने से बाएं और पल में बाएं से दाहिने धान काट रहे होंगे। बीच-बीच में कभी कमर सीधी कर पानी वाले को आवाज देते होंगे, "भैया, जरा पानी पिला देना।" उसकी इच्छा हुई कि कितना अच्छा होता यदि वह

पीले पानी की नहर के पास की घास पर लेटकर हवा में फैली पुआल और लसुनघास की खुशबू ले पाता।

"क्या तुम नाच सकते हो, मि. श्वी?" पास में आकर बैठी सेक्रेटरी सुङ ने उससे पूछा। वह कल्पना में काउंटी के जिस माहौल के मजे ले रहा था, वह माहौल तुरंत वाष्प बनकर उड़ गया। उसने अपनी गर्दन झुकाकर सेक्रेटरी सुङ को देखा। सेक्रेटरी सुङ की भी चमकती आंखें थीं और होंठों पर लिपस्टिक का गहरा रंग था।

"नहीं, मैं नहीं नाच सकता।" लिङच्युन ने विरक्त मुस्कराहट के साथ कहा। वह घोड़े चरा सकता है, हल चला सकता है, फसल काट सकता है, धान ओसा सकता है ... भला नाचने का क्या फायदा है!... वह भी इस प्रकार का नृत्य?

"उसे शर्मिंदा मत करो," उसके पिता ने दबी हंसी के साथ मिस सुङ से कहा, "देखो, मैनेजर वाङ तुम्हारे साथ नाचने के लिए आ रहे हैं।"

भूरा सूट पहने एक आदमी मेज के पास आया और उसने झुककर मिस सुङ की तरफ मुस्कान फेंकी। दोनों नाचने चले गए।

"तुम और किन बातों पर सोचना चाहते हो?" लिङच्युन के पिता ने फिर से पाइप सुलगाया। "तुम मुझसे अच्छी तरह जानते हो कि कम्युनिस्ट पार्टी की नीतियां प्रायः बदलती रहती हैं। अभी बीसा लेना आसान है, कहा नहीं जा सकता कि बाद में क्या स्थिति होगी!"

लिङच्युन ने मुड़कर पिता को देखा, "यहां और भी ऐसी चीजें हैं, जिनसे मैं बिछुड़ना नहीं चाहता।"

"सारी तकलीफ के बावजूद?" उसके पिता का प्रश्न कुरेदने वाला था।

"खुशी और आनंद का मूल्य तकलीफ से ही बढ़ाया जा सकता है।"

"क्या कहना चाहते हो?" उसके पिता ने आश्चर्य के साथ कंधे उचकाकर उसे घूरा।

लिङच्युन के दिल में उदासी की लहरें उठ रही थीं। उसने याद किया कि उसके पिता इस अपरिचित और अबोधगम्य दुनिया के भी हिस्सा हैं। केवल शारीरिक समानता आत्मिक पार्थक्य को नहीं मिटा सकती। उसने अपने पिता को उन्हीं की तरह घूरकर देखा, पर दोनों में से कोई भी सतह के नीचे की सच्चाई नहीं जान सका।

"क्या तुम अभी भी... अभी भी दुखी महसूस करते हो?" आखिरकार उसके पिता ने पूछा।

"नहीं... बिलकुल नहीं!" लिङच्युन ने पिता की तरह हाथ झटककर इन्कार किया। "आपने सही कहा कि बीती बातों को भूल जाना ही बेहतर है। आज की स्थिति बिलकुल दूसरी है..."

नयी धुन बजने लगी थी। मंद और बेपरवाह धुन किसी नहर के पानी की तरह बह रही थी। रोशनी भी पहले से कम हो गई थी, नाचते लोगों को पहचान पाना मुश्किल था। उसके पिता सिर झुकाए अपनी पेशानी को हाथों से मल रहे थे, कमजोरी और पीड़ा से भरी सांस छोड़ते हुए उन्होंने कहा, "सचमुच बीती बातों को भूल जाना ही बेहतर है। पर वे दिन कितनी तकलीफों से भरे थे... मैंने सचमुच तुम्हारी कमी महसूस की... और खासकर अब तो तुम्हारी..."

पिता की बातों ने लिङच्युन के दिल को छू लिया। परिष्कृत धुन ने उसमें सहानुभूति पैदा

की, "मैं... मुझे आप पर विश्वास है," लिङ्च्युन ने खोए और उदास स्वर में कहा, "मैंने भी आपकी कमी महसूस की।"

"तुमने कमी महसूस की?" उसके पिता ने सिर उठाया।

हां, आज से बीस वर्ष पहले एक शरद रात्रि को उस जालीदार खिड़की से जिसका कागज वर्षा से फट गया था, गट्ठरों की तरह पड़े लोगों पर चांदनी पड़ रही थी। दर्जन या उससे अधिक लोग एक छोटी कच्ची ईंट की झोंपड़ी में सोए थे। लिङ्च्युन दीवार के पास सोया था, उसने महसूस किया कि उसके कपड़े नमीयुक्त मिट्टी की गंध से भर गए हैं। ठंड में कांपते हुए लिङ्च्युन ने सोचा इस ठंडे कमरे में नम पुआल पर सोने से अच्छा बाहर बैठना होगा। बाहर चांदनी रात में दलदली कीचड़ शीशे के टुकड़ों की तरह चमक रहा था। चारों तरफ पानी ही पानी था। हवा में भी दुर्गंध थी।

लिङ्च्युन को बाहर अस्तबल मिला, जहां घोड़ों की लीद की गर्मी थी। घोड़े, खच्चर और गधे नांद में रखी घास खाते हुए नथुनों से आवाजें निकाल रहे थे। एक खाली नांद देखकर वह उसमें घुसा। वह नवजात ईसा की तरह काठ की नांद में जा सोया।

तिकोनी छत की मुंडेर के पास की फांक से तिरछी चांदनी आ रही थी। सभी जानवर सिर झुकाए नांद में रखी घास खा रहे थे, ऐसा लग रहा था जैसे वे चांद की पूजा में झुके हों। उसकी यह अवस्था और सारी परिस्थिति उसकी दुर्दशा को रेखांकित कर रही थी। भीषण अवसाद में डूबा वह स्वयं को बेहद अकेला महसूस कर रहा था। लोगों से परित्यक्त वह आज जानवरों की श्रेणी में आ गया था।

वह खूब रोया। जिंदगी ने जैसे सिकोड़कर उसे छोटा कर दिया था, आज छोटी नांद भी वैसे ही उसके बदन को दबा रही थी। पहले उसे पिता ने छोड़ा। उसके बाद मां की मृत्यु हुई। उसके मामा ने उसकी मां का सारा सामान हथिया लिया और उसे छोड़ दिया। इसके बाद वह एक स्कूल के छात्रावास में गया, जहां सरकारी अनुदान से उसकी शिक्षा-दीक्षा हुई और जिंदगी चली। कम्युनिस्ट पार्टी ने उसे अपना लिया और शिक्षित किया। असामान्य पारिवारिक जिंदगी के कारण अल्पभाषी और अत्यंत संवेदनशील होने के बावजूद धीरे-धीरे छठे दशक की सामूहिक उत्साह भावना ने उसे प्रभावित किया और वह उसमें रुचि लेने लगा। उस दशक में हाई स्कूल के सभी छात्र भविष्य का एक ही सुंदर सपना देखते थे। पढ़ाई पूरी करने के बाद उसका सपना साकार हुआ। उसे शिक्षक की नौकरी मिली; नीला माओ सूट पहनकर हाथ में खड़िया और नोटबुक लिये वह नित्य प्रति कक्षा में जाने लगा। उसे अपनी जिंदगी में एक उद्देश्य मिल गया। दक्षिणपंथी विरोधी आंदोलन आरंभ होने पर स्कूल की पार्टी शाखा के सचिव को दक्षिणपंथियों का कोटा पूरा करना था और पार्टी नेताओं ने बड़ी आसानी से उसे उसके पिता की श्रेणी में डाल दिया। खून का रिश्ता अपरिहार्य रूप से मनुष्य के वर्ग को निर्धारित करता है, यही उस समय की मान्यता थी। इसलिए उसे पूंजीपति वर्ग का एक सदस्य घोषित कर दिया गया। पहले पूंजीपति वर्ग ने उसका परित्याग किया। पूंजीपति वर्ग से उसे कुछ भी तो नहीं मिला था, पर "पूंजीपति" शब्द उसके जीवन से जुड़ गया था। बाद में

जनता ने उसका परित्याग कर दिया और उस पर बुर्जुआ दक्षिणपंथी होने का ठप्पा लगा दिया। अंततः वह सबके द्वारा त्याग दिया गया और उसे सुदूर फार्म में पुनर्शिक्षित करने के लिए भेजा गया।

अपना चारा समाप्त कर एक घोड़े ने लिङच्युन की नांद की तरफ मुंह बढ़ाया। यथासंभव अपनी गर्दन खींचकर वह नांद के पास पहुंचा और उसने नांद में मुंह डाला। घोड़े का मुंह लिङच्युन के सिर के ऊपर था। लिङच्युन ने अपने चेहरे पर घोड़े की गर्म सांस महसूस की। उसने देखा कि कत्थई घोड़ा अनाज की तलाश में उसके सिर पर होंठ फेर रहा था। थोड़ी देर में घोड़े को वहां किसी आदमी के होने का पता चला। चौंकने के बजाए उसने लिङच्युन के सिर को सूंघा और अपनी नाक से उसके चेहरे को सहलाया। उसने प्यार के साथ घोड़े का लंबा मरियल सिर सहलाया, सिसकियों से उसका गला रुंध गया, उसने अपने आंसू घोड़े की अयाल में पोंछे। थोड़ी देर के बाद नांद में घुटनों के बल बैठकर उसने अपने नीचे से अनाज निकालकर घोड़े तक बढ़ाया।

पापा, उस समय आप कहां थे?

३

और अब उसके पिता आए थे।

यह सपना नहीं था! उसके पिता बगल के कमरे में सो रहे थे और वह भी "सिमन्स" बिस्तरे पर पसरा हुआ था। उसने अपने बिस्तरे के गद्दे को सहलाया, यह काठ की नांद से कितना भिन्न था! जालीदार पर्दे से छनकर आ रही चांदनी कालीन, सोफे और बिस्तरे पर पड़ रही थी। दिन भर में लिङच्युन ने जो कुछ अनुभव किया था, वह चांदनी में स्पष्ट आकार ले रहा था। वह अच्छी तरह से समझ गया था कि वह पूर्णतः इनके प्रतिकूल और अनभ्यस्त है। उसके पिता लौटे थे, पर एक अजनबी की तरह। उसके पिता की वापसी ने उसकी तकलीफों को ताजा कर दिया था और उसकी मानसिक शांति भंग कर दी थी।

हालांकि शरद ऋतु आ चुकी थी, पर कमरे की गर्मी और उमस बढ़ती जा रही थी। अपना कंबल फेंककर वह बिस्तरे पर बैठ गया; उसने लैंप जलाया और बगैर किसी लगाव के कमरे में चारों तरफ नजर डाली। उसकी निगाह आकर अपने बदन पर रुकी। उसने अपनी बलिष्ठ बाहों की मांसपेशियों और उभरी हुई पिंडलियों को देखा। फिर पैर के तिरछे अंगूठे और हथेली व तलवे में पड़ी गांठों को देखते हुए उसने पिता की दोपहर में कही बात याद की।

दोपहर में कॉफी पीने के बाद उसके पिता ने सेक्रेटरी सुङ को बाहर भेज दिया था। फिर उन्होंने अपनी कंपनी की प्रगति और लिङच्युन के सौतेले भाइयों की अयोग्यता तथा लिङच्युन और जन्मभूमि के प्रति अपनी लालसा के बारे में बताया था।

"तुम यदि मेरी बगल में रहोगे तो मुझे थोड़ा संतोष होगा।" उसके पिता ने कहा। "तीस वर्ष पहले की बात के बारे में मैं जितना अधिक सोचता हूं, मेरी परेशानी उतनी ही बढ़ जाती

है। मैंने महसूस किया था कि मुख्यभूमि में चल रहे वर्ग संघर्ष अभियान में तुम्हारी बुर्जुआ पारिवारिक पृष्ठभूमि ने तुम्हारी जिंदगी अवश्य मुहाल कर दी होगी। मैंने तो यहां तक सोच लिया था कि तुम जीवित भी नहीं होगे ओर तुम्हारी चिंता से मैं लगातार परेशान रहता था। बचपन की तुम्हारी तस्वीर हमेशा मेरी आंखों के सामने आ जाती थी। मुझे अभी भी याद है, तुम अपने जन्म के बाद आया की गोद में किस तरह सोए हुए थे। कल ही की बात लगती है, तुम्हारे दादा ने नानचिङ विदेशी-मामलात-ब्यूरो के पास स्थित प्रवासी चीनी होटल में तुम्हारे जन्म की खुशी पर बड़ी पार्टी दी थी। उस दिन शाङहाए के सभी औद्योगिक व व्यापारिक घरानों, रुङ, क्वो, ल्यू और चङ परिवारों के लोग उस पार्टी में आए थे। शायद तुम्हें मालूम हो कि तुम अपने परिवार के 'सबसे बड़े बेटे के सबसे बड़े बेटे'..."

लैंप के हल्के हरे शेड से छनकर आते प्रकाश में लिङच्युन ने अपने हृष्ट-पुष्ट बदन को देखा, वह अजीब भावों से घिर गया। आज ही उसके पिता ने पहली बार उसके बचपन की परिस्थिति के बारे में बताया था, उसे उन बातों की याद नहीं थी। अपने बचपन के बारे में जानने के बाद उसके मस्तिष्क में अपने अतीत और वर्तमान की दो स्पष्ट विरोधी छवियां उभरीं। आखिरकार उसे अपने पिता की परेशानी समझ में आई : एक समृद्ध और संपन्न परिवार के सबसे बड़े लड़के का सबसे बड़ा लड़का, बचपन में रेशम के मुलायम गद्दों में लिपटा और शानदार पार्टी में शहर के बड़े उद्योगपतियों और उनकी श्रीमतियों का आकर्षण केंद्र आज एक मजदूर मात्र था! अपने जीवन की एक अति से दूसरी अति के बीच उसने कितनी खुशी और पीड़ा महसूस की थी।

श्रम सुधार कैम्प से निकलने के बाद समस्या थी कि लिङच्युन को कहां भेजा जाए? उसका कोई घर नहीं था। इसलिए उसे फार्म पर घोड़े चराने के लिए रख लिया गया और वह चरवाहे के नाम से जाना जाने लगा।

प्रातःकालीन सूरज की किरणें अभी विलो की ऊपरी टहनियों को सहला रही थीं और घास के मैदान में घास पर जमी ओस की रुपहली बूंदें सूरज की किरणों से चमक रही थीं, तभी लिङच्युन ने बाड़े का फाटक खोला। बाड़े के जानवर एक-दूसरे को धक्का देते हुए फाटक के घास के मैदान की ओर भागने लगे। इससे चिड़ियां घास के मैदान से तीर की तरह चौंककर चीखते हुए जंगल की ओर उड़ गईं। घोड़े पर सवार घास मैदान की पगडंडियों से गुजरते हुए उसे ऐसा लग रहा था, मानो प्रकृति उसे अपनी गोद में उठा रही हो।

घास मैदान में नरकटों से भरा एक दलदल था। सभी घोड़े सिर झुकाए हुए घास की तलाश में नरकटों की झाड़ियों में घुसे। दलदल के बाहर बैठा वह केवल घोड़ों के हिनहिनाने और उनके चलने से आती छप-छप की आवाजें सुन पा रहा था। एक पहाड़ी ढलान पर लेटकर वह आकाश की तरफ देखने लगा; नीले आकाश में जिंदगी की तरह सफेद बादल विभिन्न रूप और आकार ले रहे थे। घास की पत्तियों को लहराती और दलदल के पानी को छूती हवा अपने साथ ताजी आर्द्रता, घोड़ों के पसीने की गंध और प्रकृति की महक ले आई; हवा ने उसे ताजगी और एक प्रकार की सांत्वना दी। हाथ ऊपर उठाकर उसने अपनी गर्दन

कांख की तरफ घुमाई, उसके बदन में प्रकृति की खुशबू मिल गई थी। आत्मिक ताजगी ने उसे विश्वास और स्वप्न से आपूरित किया, उसने यह महसूस किया कि वह घास मैदान की हवा में घुल-मिल गया है। उसने प्रकृति के हर अंश में स्वयं को देखा और अकेलेपन की पीड़ा से मुक्त हो गया। उसकी उदासी, भाग्य की विडंबना और हताशा विलुप्त हो गई और उनकी जगह प्रकृति और जीवन के प्रति अकस्मात उभरे प्रेम ने ले ली।

दोपहर में घोड़े एक-एक करके नरकटों की झाड़ियों से बाहर निकले, उनका पेट भरा हुआ था, अयाल लहरा रहे थे और वे अपनी पूंछों को झटककर कुकुरमाछियों और मक्खियों को भगा रहे थे। सभी घोड़े उसके पास आकर बड़े विश्वास व घनिष्ठता के साथ खड़े हो गए; वे आंखें फाड़कर अपने चरवाहे को देख रहे थे। सात नंबर का चितकबरा घोड़ा बार-बार झुंड के कमजोर घोड़ों को तंग कर रहा था, अंत में वह सौ नंबर के लंगड़े घोड़े को दांत काटने और सताने लगा। सौ नंबर लंगड़े घोड़े से बर्दाश्त नहीं हुआ, उसने भी पलटकर अपनी लंगड़ी टांग से दुलत्ती मारी। सात नंबर घोड़ा पीछे लौटा और किसी बदमाश बच्चे की तरह अपनी गलती छिपाने के लिए सिर उठाकर झुंड के बीच दौड़ने और खुर से मिट्टी उड़ाने लगा। इसी समय लिङच्युन उठा और उसने दो-तीन बार चाबुक फटकारा। सभी घोड़ों के कान खड़े हो गए और उन्होंने भर्त्सना भरी नजरों से सात नंबर घोड़े को देखा। सात नंबर घोड़ा डांट खाए स्कूली लड़के की तरह चुपचाप खड़ा था। वह घुटने भर दलदल में खड़ा मुंह ऐंठता हुआ अपने अगले लंबे दांतों को कटकटा रहा था। ऐसे समय में लिङच्युन को महसूस हुआ कि वह घोड़ों का साधारण चरवाहा नहीं है, बल्कि परीकथाओं में वर्णित दैवी शक्ति और मानव मेधा से संपन्न अलौकिक जानवरों का साथी राजकुमार है।

दोपहर की तेज धूप थी। पहाड़ी की तलहटी में बादलों की छाया धीरे-धीरे सरक रही थी। गर्मी से परेशान जल-पक्षियों का एक झुंड दिखाई पड़ा। चहचहाते हुए जल-पक्षियों का झुंड नरकटों में जा घुसा।

इस इलाके में न केवल भेड़ों व जानवरों को जीवन प्रदान करने वाली घास मैदान की हवा थी, बल्कि हरेभरे पहाड़ों और नीली दरियाओं की अनुपम सुंदरता भी थी। उसके अनुभवों के सीमित क्षेत्र में "मातृभूमि" जैसी अमूर्त धारणा को स्रवित किया जा सकता था और इसी प्रक्रिया में उसने उसकी पूर्णता के भव्य रूप का दर्शन किया। लिङच्युन ने संतुष्टि महसूस की। कुल मिलाकर जीवन सुंदर था। प्रकृति और श्रम ने उसे बहुत कुछ दिया था, जिन्हें वह स्कूल में हासिल नहीं कर सकता था।

कभी-कभी बारिश हो जाती थी। बारिश होने से पहले काले बादल काले रेशमी पर्दे की तरह आकाश से पहाड़ी ढलानों को छूते थे। घास मैदान को नहलाती तेज किरणें सुखद सुनहरी किरणों में बदल जाती थीं। फिर हवा के थपेड़ों से काले बादल पहाड़ी ढलानों से धीरे-धीरे उतरते थे। बारिश की बड़ी बूंदें टपकने से पहले घास मैदान पर राख के रंग का कुहासा-सा छा जाता था। तूफान आने के पहले लिङच्युन को अपने घोड़ों को हांककर किसी जंगल में शरण लेनी पड़ती थी। घोड़े पर सवार अपना चाबुक झटकारता हवा के झोंके के विपरीत वह घोड़े को सरपट दौड़ाता। हवा के झोंके से उसकी फटी कमीज डैनों की तरह

लहराने लगती थी। वह घोड़ों के झुंड में इधर-उधर उन्हें दौड़ाता और तरह-तरह की आवाजें निकालता झुंड के बिछुड़े घोड़ों को बुलाता था। ऐसे मौके पर उसे अपने अंदर प्रचण्ड शक्ति महसूस होती और उसे लगता कि वह नगण्य या तुच्छ नहीं है। इसी तरह हवा, बारिश और कीड़ों का सामना करते हुए उसने धीरे-धीरे अपना आत्मविश्वास फिर से हासिल किया।

ऐसी विपरीत स्थिति में ही विभिन्न ब्रिगेडों के चरवाहे एकत्र होते थे। बारिश से बचने के लिए उनके लिए बनी झोंपड़ी कुहासे और बारिश में लंगर डाली किसी संकरी नाव के जैसी थी। उस झोंपड़ी के अंदर ठंड और सीलन रहती थी और सस्ते तंबाकू का नीला धुंआ भरा रहता था। लिङच्युन चरवाहों के अश्लील मजाक और लतीफे सुनता था और उसे आश्चर्य होता था कि वे श्रम या जीवन के जटिल अनुभवों के बारे में बहुत कम बातें करते थे, जबकि वह जीवन और श्रम के जटिल अनुभवों से परेशान रहता था। दरअसल उनका जीवन आरंभ से ही साधारण था, शायद उनकी भी जिंदगी में मुश्किलें थीं, पर सारी बातों के बावजूद वे खुश और संतुष्ट थे। लिङच्युन के दिल में उनके प्रति श्रद्धा पैदा हुई।

एक दिन साठ वर्ष से अधिक उम्र का एक बूढ़ा चरवाहा उसके पास आया और उससे पूछा, "लोग कहते हैं कि तुम दक्षिणपंथी हो। दक्षिणपंथी का मतलब क्या होता है?"

उसने शर्म से सिर झुका लिया और धीरे से बोला, "दक्षिणपंथी... दक्षिणपंथी वे लोग होते हैं, जिन्होंने भूलें की हों।"

"दक्षिणपंथी लोग सही व्यक्ति होते हैं, उन्होंने १९५७ में सीधी-सच्ची बातें कही थीं," सातवें ब्रिगेड के एक चरवाहे ने कहा। "पढ़े-लिखे व्यक्तियों को उसी वर्ष दक्षिणपंथी कहा गया।" सातवें ब्रिगेड का वह चरवाहा मुंहफट और साफदिल था, उसे लतीफे सुनाने में बड़ा मजा आता था। उसे सभी "बातूनी क्वो" कहकर पुकारते थे।

"जहां तक सच्ची बात कहना 'भूल करना' या और कुछ है... तो कोई भी सच्ची बात न करे तो सब कुछ डंडे की मार से बाहर रहेगा।" बूढ़ा चरवाहा किसी सोच में डूब गया, उसने पाइप से दो-तीन कश लेने के बाद आगे कहा, "दूसरी तरफ, कार्यकर्ता होने से बेहतर है मजदूर होना। मैं लगभग सत्तर का हो गया हूं, पर मेरी आंखें अभी तक ठीक हैं, कान काम करते हैं, मेरी पीठ सीधी है और खाते वक्त मैं भुनी दाल को भी कुतर या चबा सकता हूं..."

बातूनी क्वो ने मुस्कराकर कहा, "इसका मतलब तुम्हारे बेटे-पोते सभी मजदूर ही होंगे।"

बूढ़े चरवाहे ने पलटकर जवाब दिया, "मजदूर होने में आखिर क्या बुराई है? यदि तुम शारीरिक श्रम नहीं करोगे तो तुम्हारी जिंदगी तबाह हो जाएगी, अधिकारी बनना और शिक्षा प्राप्त करना तो दूर रहा।..."

इस तरह की सरल व सीधी-सादी बातचीत में लिङच्युन को इंद्रधनुष देखने-सी खुशी होती थी। वह आह्लादित हो उठता था। वह एक साधारण आदमी बनना और अपने साथी मजदूरों का संतोष प्राप्त करना चाहता था।

लंबे समय तक शारीरिक श्रम करने और प्रकृति व मनुष्य के बीच के स्वाभाविक उतार-चढ़ाव से धीरे-धीरे लिङच्युन ने जीने का एक तरीका अपना लिया। इस नए जीवन ने उसकी दैनिक जरूरतों के अनुसार उसे ढाला। समय बीतने के साथ उसका अतीत एक अस्पष्ट स्वप्न की

तरह रह गया या फिर किसी और के बारे में पढ़ी कहानी के समान हो गया। जवानी के दिनों से बिलकुल अलग तरह की नयी जिंदगी से उसकी युवाकाल की स्मृतियां भी धुंधली होती चली गईं। शहर में बिताई जवानी के दौर की जिंदगी माया और भ्रम तथा देहात की जिंदगी ही एकमात्र ठोस सच्चाई लगने लगी।

अंततः वह न केवल स्थानीय जीवन का आदी हो गया, बल्कि कहीं बाहर अब उसका मन भी नहीं लगता था। वह एक देहाती चरवाहा हो गया था।

"सांस्कृतिक क्रांति" के आरंभ होने के समय तक स्थानीय लोग लिङच्युन के अतीत के बारे में भूल चुके थे। क्रांति की उग्र मंजिल में कुछ लोगों ने उसके दक्षिणपंथी होने की याद दिलाई। लिङच्युन की फिर से लोगों के सामने भर्त्सना की जाने वाली थी। उस समय विभिन्न ब्रिगेडों के चरवाहे झोंपड़ी के अंदर बहस के लिए एकत्र हुए और उन्होंने फैसला किया कि चुपचाप बैठें रहने से कुछ नहीं होगा। फार्म के नेताओं की विदाई के बाद उन्होंने अपने जानवरों को एकत्र किया और पहाड़ी इलाके के गर्मी के घास मैदान की तरफ जाने के लिए तैयार हुए। लिङच्युन को भी अपने घोड़ों के साथ जाना था। उस समय क्रांतिकारी जनता का कोई भी सदस्य लिङच्युन की जगह काम करना नहीं चाहता था, क्योंकि वहां से महीनों लौटना संभव नहीं होता था। दो चरवाहों ने घोड़े पर सामान लादने में लिङच्युन की मदद की। घोड़े पर सवार सभी चरवाहे हिचकोले खाते उस अव्यवस्थित जगह को छोड़कर चले गए, जहां नई मुश्किलें पैदा होने वाली थीं।

चरवाहे जैसे ही घास मैदान की पगडंडियों में पहुंचे, उनमें से एक-दो ने खुशी से चिल्लाकर कहा, "चलो जान बची! अब हम पहाड़ियों में जा रहे हैं, अब वहां दोष ढूंढ़ने वाले कुछ भी करें, हमें क्या?" चरवाहों के शोर के कोरस के साथ एक सीटी जैसी मर्माहत ध्वनि मिश्रित होकर प्रतिध्वनित हो रही थी और घोड़ों के सरपट भागने के कारण उनके खुरों से उड़ती धूल का पीला बादल छा रहा था। सामने दूर आर्द्र घास मैदान थे... लिङच्युन के दिल में इन दिनों की याद अमिट रूप से अंकित हो गई थी; वह हमेशा इन दिनों की याद कर भावुक हो जाता था।

इस जगह से उसकी खुशियां और परेशानियां दोनों जुड़ी हुई थीं। व्यक्तिगत अनुभव बढ़ने के साथ-साथ उसकी खुशी का अहसास भावनाओं को पार कर गया था; परेशानी और पीड़ा बड़ी मुश्किल से ही उसे छू सकती थी। धीरे-धीरे उसकी परेशानियां महत्वहीन हो गईं।

पिछले वर्ष वसंत में फार्म की प्रबंध समिति ने अचानक लिङच्युन को पहाड़ी घास मैदान से बुलाया। हाथ में टोपी लिए वह आशंकित कदमों से "राजनीतिक विभाग" लिखे कमरे में घुसा। सहायक निदेशक तुङ ने पहले उसे एक औपचारिक दस्तावेज पढ़कर सुनाया और फिर बताया कि लिङच्युन को गलती से दक्षिणपंथी ठहराया गया था तथा अब उसे सभी दोषारोपणों से मुक्त कर दिया गया है। यह सारी तैयारी उसे फार्म के स्कूल का शिक्षक बनाने के लिए की गई थी।

इस पूरी बातचीत में सहायक निदेशक तुङ गंभीर बने रहे, उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं

था। लिङच्युन के कमरे में आने के पहले से एक मक्खी भनभना रही थी, वह उड़कर कभी दीवार पर बैठती थी तो कभी फाइलों के ऊपर सुस्ताती थी। सहायक निदेशक तुङ की आंखें मक्खी का पीछा कर रही थीं; उन्होंने एक पत्रिका मोड़ी और इस प्रयास में लगे रहे कि मक्खी को मार गिराएं।

"तुम बगल के कमरे में जाओ और मिस फान से अपने स्थानान्तरण का कागज ले लो। कल स्कूल में जाना है।" मक्खी आकर उनकी मेज पर बैठी। उन्होंने पत्रिका से उसे मारा, पर वह चतुराई से एक तरफ निकल गई। सहायक निदेशक तुङ निराश व निढाल होकर अपनी कुर्सी पर बैठ गए। "हां, अब अपना काम मन लगाकर करो और ख्याल रखना कि आइंदा कोई भूल न हो बस!"

इस घटना की आकस्मिकता ने लिङच्युन को बिजली के झटके की तरह स्पंदित कर दिया। वह भावशून्य सा हो गया। अपनी परिस्थिति में वह सचमुच राष्ट्र की राजनीति के संदर्भ में दोषारोपणों से मुक्ति का अर्थ नहीं समझ सका। उसकी समझ में यह भी नहीं आया कि इससे उसके अपने जीवन में क्या मूलभूत परिवर्तन आएंगे। फिर भी अपनी सहज अनुभूति से उसे लगा कि अच्छे दिन आने वाले हैं। रक्त के साथ प्रवाहित हो रहे अल्कोहल की तरह खुशी के अहसास ने उसकी भावशून्यता तोड़ी और अजीब उत्साह का संचार किया। उसका गला सूख गया और पूरा बदन कांपने लगा। आखिकार वह अपने आंसुओं को न रोक सका, उसके दिल से आ रही गहरी सिसकियों की आवाज किसी पहाड़ी में प्रतिध्वनित होती आवाज-सी जान पड़ी। इस दृश्य ने गंभीर और भावरहित सहायक निदेशक तुङ को भी भावुक बना दिया, उन्होंने हाथ बढ़ाकर लिङच्युन को सहारा दिया। तुङ का हाथ अपने हाथ में लेने के बाद भविष्य के प्रति उसकी थोड़ी आशा बंधी।

इस तरह उसने फिर से नीला माओ सूट पहनकर हाथ में खड़िया और नोटबुक लिये स्कूल में प्रवेश किया। उसने अपने बाईस वर्ष पुराने सपने का नवीकरण किया।

फार्म के किसी भी मजदूर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। उनके बच्चे फटे चिथड़े पहनते थे और क्लास में पसीना और धूल की गंध तथा सूर्य-विरंजित शुष्कता भरी रहती थी। साधारण और बेढंगे डेस्कों के पीछे बैठे बच्चों ने आंखें फाड़कर लिङच्युन को आश्चर्य से देखा; उन्हें यह नहीं मालूम था कि उनका शिक्षक कुछ दिनों पहले तक एक चरवाहा मात्र था। पर कुछ ही दिनों के बाद उसने बच्चों का दिल जीत लिया। उसने काम में कोई विशेष योगदान नहीं किया। उसने यह भी कल्पना करने का साहस नहीं किया कि वह "चार आधुनिकीकरण" या समाजवाद की सेवा कर रहा है। उसने सोचा कि ऐसी यशस्वी प्रेरणाएं वीरों की होती हैं। उसने एक शिक्षक की जिम्मेदारी पूरी करने के अलावा और कुछ नहीं किया। यही करने में उसे बच्चों का प्रेम व आदर मिला। पेइचिङ आने की सुबह उसने देखा था कि सभी बच्चे सड़क के किनारे पंक्ति में खड़े उसकी घोड़ागाड़ी को जाता एकटक देख रहे थे। शायद उन्हें भी मालूम हुआ हो कि आखिर उसने अपने विदेश में रहने वाले पिता से संपर्क कर लिया और कुछ दिनों के अंदर अपने धनी पिता के साथ देश छोड़कर जा रहा है। सभी बच्चे आंसू रोके उदास भाव से उसकी घोड़ागाड़ी को जाते देखते रहे। घोड़ागाड़ी

पुल पार करके सफेद पॉपलर के जंगलों के बीच से निकली। जब तक घोड़ागाड़ी आंखों से ओझल नहीं हो गई, वे चुपचाप खड़े उसे देखते रहे...

अभी भी कभी-कभार दूर-दूर से चरवाहे लिङच्युन से मिलने आया करते थे। बूढ़ा चरवाहा अब लगभग अस्सी का हो चुका था, पर अभी भी पहले की ही तरह पैदल चल लेता था। एक दिन उसने लिङच्युन के बिस्तरे पर बैठकर एक शब्दकोश उठा लिया और उसे उलट-पलटकर देखने लगा, "बाप रे, थोड़े पढ़े-लिखे आदमी की इतनी मोटी किताब पढ़ने में तो पूरी जिंदगी लग जाएगी।"

बातूनी क्वो ने कहा, " अरे बाबा, वह शब्दकोश है। अब तुम सचमुच सठिया रहे हो।"

"हां, अब तो एक जिंदगी बीत गई। मैं तो अपनी आंखों के रहते भी अंधा ही हूं, जब कोई फिल्म देखने जाता हूं तो फिल्म व अभिनेता-अभिनेत्रियों के नाम भी नहीं पढ़ सकता। बस केवल उनके अभिनय देखता हूं।" चरवाहे ने उसांस भरी। "इन दिनों स्कूल जाना आवश्यक हो गया है। और कुछ भी करने के लिए पढ़ा-लिखा होना जरूरी है। एक बार मैं अपने जानवरों के लिए कुछ दवाइयां ले आया। जानते हो क्या हुआ? मैं उन्हे एक मलहम खिलाने जा रहा था, पर तभी अचानक मुझे महसूस हुआ कि मलहम तो जख्म और घाव पर लगाया जाता है।"

बातूनी क्वो ने लिङच्युन से कहा, "तो दक्षिणपंथी, तुम तो चरवाही के काम से मुक्त हो गए, पर हम अभी तक चिपके हुए हैं। हम तो खैर इसी काम के लिए बने हैं, पर हमारे बच्चों को तुमसे उम्मीदें हैं..."

बूढ़े चरवाहे ने सहमति प्रकट की, "बिलकुल सही, अगर तुमने मेरे पोते को इस मोटी किताब को पढ़ने लायक बना दिया तो पुराने दोस्तों के प्रति अहसान होगा।"

हालांकि इस बातचीत में सभ्य भाषा नहीं थी, फिर भी इससे उस काम के महत्व का स्पष्ट ज्ञान हुआ और वह भविष्य के प्रति अधिक आशान्वित हुआ। चरवाहों के शरीर से लिङच्युन को घोड़े के पसीने, घास और अन्य प्राकृतिक गंध मिलती थी। चरवाहों के साथ उसे जो आत्मीयता मिलती थी, वह पिता और सेक्रेटरी सुङ के साथ बिताए घुटन भरे माहौल से बिलकुल अलग थी।

चरवाहों, अपने छात्रों और अपने सहकर्मियों की नजर से उसे अपनी कीमत का पता चलता था। इससे अधिक सौभाग्य की बात और क्या हो सकती थी कि किसी को दूसरे की आंखों से अपनी कीमत का पता चले!

४

सुबह लिङच्युन ने पिता और सेक्रेटरी सुङ के साथ वाङफूचिङ सड़क का एक चक्कर लगाया था। उसने महसूस किया कि वह अब शहरी जीवन के अनुकूल नहीं रह गया है। सीमेंट और एस्फाल्ट की सड़क पर चलने में उसे वह मजा नहीं आ रहा था, जो नर्म और

मुलायम घास पर चलने में आता था। वाङफूचिङ सड़क पर एक-दूसरे से अपरिचित लोगों की भीड़ अपनी चहलपहल के बावजूद उसे उदास कर गई। ऊपर से भीड़ के चौतरफा शोर ने थोड़ी ही देर में उसे थका दिया।

हस्तशिल्प की एक दुकान से लिङच्युन के पिता ने चिङतचन पोर्सलीन का एक पारंपरिक चीनी डिनर सेट खरीदा और उसके लिए छै सौ य्वान का चेक काटा। लिङच्युन ने बर्तनों की एक छोटी दुकान से अचार रखने का मर्तबान दो य्वान में खरीदा। पीली और भूरी रेखाओं की डिजाइन का छोटा व उत्कृष्ट मर्तबान हान राजवंश के मकबरे की खुदाई से प्राप्त मर्तबान लग रहा था। लिङच्युन ने उत्तरपश्चिम चीन की छोटी काउंटी में कभी इतना सुंदर घरेलू बर्तन नहीं देखा था। श्यूचि को हमेशा अचार के अच्छे मर्तबानों की खोज रहती थी और बहुत दिनों से वह एक ऐसा मर्तबान खरीदना चाहती थी। उनके घर पर अभी जो अचार का मर्तबान था, वह मिट्टी का बना था और किसी ने शेनशी प्रांत से लाकर उन्हें दिया था। श्यूचि ने इसके बदले में कई शामें बिताकर कपड़ों के जूते में तलवे लगाए थे। पुराने मर्तबान की हल्की नीली चमक गायब हो गई थी और वह देखने में एकदम भद्दा लगने लगा था।

"तुम्हारी पत्नी अवश्य ही बहुत सुंदर होगी," सेक्रेटरी सुङ ने होटल लौटने पर चुटकी लेने के अंदाज में पूछा। "उसके प्रति तुम्हारा प्यार देखकर किसी को भी ईर्ष्या हो सकती है।" सेक्रेटरी सुङ ने लाल व काली रेशमी कमीज के ऊपर "वी" गले का ढीला-ढाला हल्का बैंगनी स्वेटर और उससे मेल खाता धूसर रंग का ऊनी स्कर्ट पहन रखा था। शरद के सूर्य की गर्म किरणों ने उसके चमेली के सेंट की खुशबू बढ़ा दी थी।

"शादी हमेशा एक तरह का वचन और कर्तव्य रहा है," लिङच्युन के पिता ने कहा। अपनी कॉफी मिलाते हुए वह एक तरफ बैठ गए। शायद इस विषय ने व्यक्तिगत अनुभवों को जीवित कर दिया था; वह बड़ी सावधानी से शब्दों को चुनकर अपनी बात कह रहे थे। "कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को प्यार करे या न करे, उसे पूरी कर्तव्यनिष्ठा के साथ अपने वचन और कर्तव्य को निभाना पड़ता है। अन्यथा उसका अन्तःकरण परेशान रहता है और वह पश्चाताप की आग में जलता रहता है। मैं तुमसे अकेले विदेश चलने के लिए नहीं कह रहा हूं, तुम निश्चित रूप से अपनी पत्नी और बच्ची को भी ले चलोगे।"

"हां तो, मिस्टर श्वी, क्या आप हमें अपने रोमांस के बारे में नहीं बताएंगे?" सेक्रेटरी सुङ ने पूछा। "आपका प्रेम प्रसंग भी अत्यंत रोचक होगा। तुम्हारे जैसे स्मार्ट युवक के पीछे अवश्य ही लड़कियां पड़ी होंगी।"

"भला मैं कैसे ऐसा रोमांस कर सकता था?" लिङच्युन ने झेंपते हुए मुस्कराकर कहा, "जब हमारी शादी हुई, हम एक-दूसरे को जानते भी नहीं थे।... रोमांस का तो सवाल ही नहीं उठता था।"

"ओह..." सेक्रेटरी सुङ ने मजाकिया लहजे में आश्चर्य व्यक्त किया, जबकि उसके पिता की समझ में न आया और उन्होंने अपने कंधे उचकाए।

लिङच्युन उन्हें अपनी शादी के बारे में बताना चाहता था, इस तरह की असामान्य शादी सामाजिक पृष्ठभूमि एक विपत्ति के समान ही थी—यह विपत्ति चीनी जनता का अपमान

भी थी। उसे डर था कि उसकी कहानी सुनकर उन्हें उन बातों पर उपहासपूर्ण हंसी आएगी, जो उसके लिए अत्यंत पवित्र थीं। लिङच्युन ने अपनी झिझक मिटाने के लिए कॉफी की चुस्कियां लीं। कॉफी के कड़वे स्वाद में एक मिठास थी, वास्तव में दोनों को अलग करना असंभव था। दोनों मिलकर ही वह विशेष स्वाद पैदा करती हैं जो कॉफी पीने वालों को कॉफी पीने के लिए अनुप्रेरित करता है। लिङच्युन के पिता और सेक्रेटरी सुङ कॉफी के स्वाद की प्रशंसा कर सकते थे, पर क्या वे जीवन की जटिलता को भी समझने में उतने ही समर्थ थे? उस अव्यवस्था के दौर में शादी भी किसी अन्य सामाजिक संस्था की तरह अपनी स्वाभाविक प्रतिष्ठा खो चुकी थी। यह महज सुविधा का विषय था। उसके पिता और सेक्रेटरी सुङ इसकी असंगति को देख सकते थे, पर इस सुविधा को सौभाग्य में कैसे बदलें, यह वे नहीं जानते थे। इसके अतिरिक्त जितनी मुश्किल उसकी परिस्थिति थी, उसे अपना अप्रत्याशित भविष्य उतना ही मूल्यवान जान पड़ता था। लिङच्युन ने सोचा कि उग्र दुख मगर तीव्र संवेदना को समझना किसी दूसरे के लिए मुश्किल है जिसे वह और उसकी पत्नी अपनी शादी की विचित्र परिस्थिति को याद कर महसूस करते थे।

१९७२ के वसंत की एक दोपहर को यह सब हुआ। वह दिन भी और दिनों की तरह आधा बीत चुका था। लिङच्युन घोड़ों को पानी पिलाने के बाद उन्हें बाड़े के अंदर हांककर घर लौटा था। उसने अभी अपना चाबुक रखा ही था कि बातूनी क्वो उसके कमरे में आ पहुंचा।

उसने उत्साह से पूछा, "अरे दक्षिणपंथी, क्यों, शादी करना चाहते हो? यदि हो, तो मैं तुम्हारी इच्छा पूरी कर सकता हूं, मैं तुम्हारी दुल्हन आज रात को ला सकता हूं।"

उसने क्वो की बात को मजाक समझा, इसलिए मुस्कराकर कहा, "फिर ले आओ।"

"ठीक है, मर्द की जबान एक होती है। बस तुम अपनी तैयारी कर लो। दुल्हन के कागजात तैयार हैं। मैं अभी-अभी तुम्हारे पार्टी सचिव से मिलकर आया हूं; उन्होंने कहा कि यदि तुम राजी हो तो वह कागज पर हस्ताक्षर कर देंगे। ठीक है, मैं तुम्हारे लिए सभी कागजात पूरे कर घर लौटते समय फार्म प्रबंध समिति को देता जाऊंगा। जब मैं वहां से लौटूंगा तो तुम्हारी दुल्हन भी मेरे साथ आएगी। आज की रात तुम्हारी सुहाग रात होगी।"

रात घिर आई। वह कुर्सी पर बैठा *मुक्ति सेना साहित्यिक मासिक* पढ़ रहा था, तभी बाहर से बच्चों की आवाज आई, "दक्षिणपंथी की दुल्हन आ गई! दक्षिणपंथी की दुल्हन आ गई!" दरवाजे पर दस्तक हुई और बातूनी क्वो ने पहले की ही तरह आकर कहा :

"लो, सब तय हो गया। मैं तुमसे एक घूंट शराब भी पिलाने के लिए नहीं कहूंगा, पर क्या अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए कम से कम एक ग्लास पानी नहीं दोगे? बस उतने ही से गला ठीक हो जाएगा। पूरी दोपहर इधर-उधर भागने में बीती, बस यों समझो कि मैं जमीन पर खड़ा ही नहीं था और फिर पंद्रह किलोमीटर चलकर आ रहा हूं।" लिङच्युन की बाल्टी से एक ग्लास पानी निकालकर पीने और अपनी कमीज की बांह से मुंह पोंछने के बाद उसने संतोष की सांस ली। दरवाजे के बाहर देखते हुए उसने आश्चर्य से पूछा, "अरे, तुम अंदर क्यों नहीं आईं? आओ, आ जाओ, अंदर आ जाओ! यही तुम्हारा घर है। आओ और

परिचित हो लो... यही दक्षिणपंथी है... इसी के बारे में मैंने तुम्हें बताया था। इसका असली नाम श्वी लिङच्युन है। यह बहुत अच्छा है, पर थोड़ा गरीब है। पर जो जितना गरीब होता है, वह उतना गौरवशाली होता है, समझीं!"

लिङच्युन ने भी देखा, दरवाजे के बाहर बच्चों के झुंड के आगे एक अपरिचित युवती खड़ी थी। उसने धूसर रंग का कुरता पहन रखा था और उसके हाथ में सफेद कपड़े की एक गठरी थी। वह उदास मगर सावधान नजरों से कच्ची ईंट की धूल भरी झोंपड़ी को तौल रही थी और अंदर आने की तैयारी में थी।

"नहीं... यह नहीं हो सकता!" लिङच्युन ने चौंककर कहा। "तुम इस हद तक आगे बढ़ गए!"

"क्यों नहीं हो सकता? तुम जैसे व्यक्ति को गंभीर होना चाहिए।" बातूनी क्वो ने अपनी जेब से कागजों का एक पुलिंदा निकालकर खाङ पर रखा। "सभी कागजों पर हस्ताक्षर हो चुका है। यह कानून है... कानून! समझ रहे हो न! ख्याल रखना, मैंने राजनीतिक विभाग को बताया कि तुमने घोड़ों को चराना छोड़ दिया है और मुझे कागज पर हस्ताक्षर करवाने की जिम्मेदारी सौंपी थी। यदि तुम अपनी जबान से मुकरते हो तो इससे बड़ी कृतघ्नता नहीं होगी! तुम मेरी बात समझ रहे हो न, दक्षिणपंथी?"

"नहीं, ऐसा नहीं हो सकता... नहीं! क्या ऐसा हो सकता है?" लिङच्युन बार-बार बातूनी क्वो से एक ही सवाल पूछ रहा था, आश्चर्य और परेशानी में वह बार-बार हाथों को झटक रहा था। युवती अंदर आकर कमरे की एकमात्र कुर्सी पर बैठ गई थी। वह बिलकुल परेशान नहीं थी; वह इस तरह बेफिक्र थी जैसे उन दोनों की बातचीत का उससे कोई संबंध नहीं हो।

"यह नहीं हो सकता? तुम मुझसे वह कह रहे हो, जिसका तुम दोनों से संबंध है। तुम मुझसे जाकर किसी से पूछने के लिए क्यों कह रहे हो?" बातूनी क्वो ने "कानून" खाङ पर रखा। "ठीक है, फिर चिंता न करो! और हां अगले वर्ष जब अपने बच्चे के जन्म की खुशी मनाओगे तो मुझे शराब पिलाने के लिए बुलाना न भूलना।" वह सीधे दरवाजे से निकला, दरवाजे के बाहर कमर पर हाथ रखकर खड़ा हो गया और वहां खड़े बच्चों को मुर्गियों की तरह भगाता हुआ बोला, "तुम लोग क्या तमाशा देख रहे हो? क्या तुमने अपने मां-बाप की शादी नहीं देखी? जाओ, घर जाकर अपने मां-बाप से पूछो। जाओ, भागो यहां से!"

इसके बाद बातूनी क्वो चला गया।

कमरे की मद्धिम रोशनी में लिङच्युन ने छिपी नजरों से युवती को देखा। वह कहीं से भी सुंदर नहीं थी। चकत्तेदार छोटी-चपटी नाक; उसके बाल पीले थे और उनमें चमक नहीं थी तथा उसके चेहरे से उदासी झलकती थी। पता नहीं क्यों लिङच्युन उस पर गहरी दया करने लगा। उसने युवती के लिए एक ग्लास पानी काठ के बक्से पर रखा और कहा, "पानी पी लो, काफी दूर से चलकर आई हो..."

युवती ने अपना चेहरा उठाया और उसकी मैत्रीपूर्ण आंखों को देखा। वह चुपचाप ग्लास का पानी गटक गई। पानी पीने के बाद जैसे उसकी ताकत लौटी। उसने खाङ के ऊपर मोड़कर रखी रजाई ठीक की और फिर खाङ के दूसरे किनारे से लिङच्युन की पैंट खींची। लिङच्युन

की पैंट घुटने के पास से घिस गई थी। पैंट को अपनी गोद में रखकर उसने गठरी खोली और गठरी से सुई, धागा व कपड़ों के टुकड़े निकाले। वह सिर झुकाए पैंट की सिलाई करने लगी। वह बड़े सुव्यवस्थित तरीके से काम कर रही थी और उसमें दमित उत्साह देखा जा सकता था। वह अपने व्यवहार में इस उत्साह को व्यक्त नहीं कर सकी, पर सामान को व्यवस्थित और कमरे को साफ करने के क्रम में लिङच्युन ने उसे महसूस किया। देखने में वह कमजोर युवती थी, पर थोड़ी ही देर में उसने कच्ची ईंट की झोंपड़ी को साफ-सुथरा और चमकदार बना दिया। कमरे के सामान को उठाते, संभालते और रखते समय उसकी उंगलियां इतनी कुशलता से चल रही थीं जैसे पियानो के काले सफेद पर्दों को दबा कोई मधुर राग छेड़ रही हों; और सचमुच थोड़ी देर में कच्ची ईंट की झोंपड़ी में मधुर राग प्रतिध्वनित होने लगा।

लिङच्युन ने बहुत पहले भूरे घोड़े से हुई अपनी मुलाकात याद की और उसके दिल में उदासी की एक लहर-सी उठी। उसे ऐसा महसूस हुआ कि वे एक-दूसरे को लंबे समय से जानते हैं और वह वर्षों से उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह अपूर्व आनन्द में अचानक उसकी बगल में बैठ गया। उसने अपना चेहरा हाथों से ढक लिया। वह सौभाग्य के आगमन को स्वीकार करने से डर रहा था। वह डर रहा था कि कहीं यह सौभाग्य अपने साथ नयी मुसीबतें न ले आए। अपनी हथेलियों के अंधेरे को देखते हुए वह इस नयी भावना को पकड़ने की कोशिश कर रहा था।

युवती ने तब तक सुई-धागा बगल में रख दिया था। युवती का अन्तःकरण कह रहा था कि इस आदमी पर वह जिंदगीभर निर्भर रह सकती और विश्वास कर सकती है। वह उसे बिलकुल अपरिचित नहीं समझ रही थी। अकस्मात युवती ने उसके झुके कंधे पर अपना हाथ धीरे से रखा। खाङ पर बैठकर उन दोनों ने पौ फटने तक बातचीत की।

श्यूचि "समृद्ध भूमि" के नाम से मशहूर सछ्वान प्रांत की रहने वाली थी, पर उन वर्षों में ऐसा अकाल पड़ा था कि लोगों को खाने के लिए शकरकंद तक नहीं मिल पाता था। मजबूरी में भूखे किसानों को अपनी समृद्ध भूमि छोड़नी पड़ी। युवतियों की स्थिति थोड़ी बेहतर थी, वे बगल के प्रांतों के युवकों से शादी कर घर बसा सकती थीं। किसी गांव में एक युवती की शादी हो जाने पर वह युवती अपने गांव की अन्य युवतियों के लिए भी वर ढूंढ़ने का प्रयास करती थी। इस तरह एक-एक करके युवतियों का दल "पहाड़ और नदियों के 'पुराने' सछ्वान" को छोड़ अपने साथ एक छोटी गठरी लिये अन्य जगहों में शरण ले रहा था। उन्होंने याङफिङ दर्रे तथा छिङलिङ पहाड़ को पार किया और भविष्य की तलाश में असंख्य छोटी-बड़ी सुरंगों को पार कर शैनशी, कानसू, छिङहाए, निङश्या या शिनच्याङ पहुंचीं। जो परिवार कुछ खर्च करने की स्थिति में थे, उन्होंने अपने घर की युवतियों के लिए रेलगाड़ी के टिकट खरीद दिए, जबकि गरीब परिवार की युवतियों को चुपचाप रेलगाड़ी का सहारा लेना पड़ा। उनकी गठरियों में कपड़े के टुकड़ों के अलावा छोटा गोल आईना और एक काठ की कंघी होती थी। शृंगार की इन दो मूलभूत सामग्रियों के सहारे अपनी सुंदरता को ताजा बनाए रखकर वे जिंदगी का जुआ खेल रही थीं। वे सौभाग्यपूर्ण भविष्य भी जीत सकती थीं और अपना सब कुछ हार भी सकती थीं...

इस प्रकार की शादी लिङच्युन के इलाके के फार्मों में आरंभ से ही प्रचलित थी। स्थानीय लड़कियों से शादी करने के लिए पर्याप्त दहेज जुटाने में असमर्थ कुंआरे सछ्वान की लड़कियों की खोज में रहते थे। सछ्वान प्रान्त की औरतें अपने गांव की अन्य शादी लायक युवतियों का जोड़ा ढूंढ़ने में लगी रहतीं। किसी कुंआरे के मिलने पर वे ऐसी युवतियों की फहरिस्त सामने रख देती थीं, वह पत्र लिखकर किसी युवती को बुला लेती थीं और युवती के आने के साथ ही उसकी शादी हो जाती थी।

श्यूचि को भी ऐसे ही पत्र लिखकर बुलाया गया था। वह सातवें ब्रिगेड के एक ट्रैक्टर ऑपरेटर युवक की खोज में आई थी। टेढ़े-मेढ़े लंबे रास्ते से वह थोड़ी देर से फार्म पर अपनी पहचान का पत्र लिए पहुंची। उसके पहुंचने के तीन दिन पहले ट्रैक्टर दुर्घटना में वह युवक दब गया था और थोड़ी देर के बाद उसकी मृत्यु हो गई थी। श्यूचि कब्रिस्तान में अंतिम श्रद्धा व्यक्त करने भी नहीं गई। उस पर किसी की कृतज्ञता का ऋण नहीं था, इसलिए उसने वहां जाने की जरूरत नहीं समझी।

श्यूचि को अपने गांव की एक औरत के साथ रहने में अच्छा नहीं लग रहा था, क्योंकि उसकी परिचित औरत के घर की हालत अच्छी नहीं थी। उसका पति विकलांग था और शादी के दूसरे साल उन्हें एक बच्चा भी हुआ था तथा उसकी भी देखभाल करनी पड़ती थी। श्यूचि हमेशा सातवें ब्रिगेड के बाड़े के बाहर निराश बैठी अपनी छाया को खिसकती देखती रहती। उसका समय ऐसे ही बीत रहा था।

बातूनी क्वो हर दोपहर को घोड़ों को पानी पिलाने के लिए बाड़े में आता था। एक दिन उसे श्यूचि के बारे में पता चला और वह घोड़ों को घास मैदान में चरते छोड़कर उसकी मदद के लिए दरवाजे-दरवाजे भटका। उस समय सातवें ब्रिगेड में केवल तीन शादी लायक कुंआरे थे। वे तीनों एक-एक करके बाड़े के पास श्यूचि को देखने गए, पर उसे देखने के बाद कोई भी उस नाटी और मरियल लड़की से शादी करने को तैयार नहीं हुआ। बातूनी क्वो को तब लिङच्युन का ख्याल आया; लिङच्युन की उम्र तीस से अधिक हो चुकी थी।

तो इस तरह लिङच्युन की शादी हुई। भला इसमें रोमांस की कोई संभावना बनती थी?

"दक्षिणपंथी की शादी हो गई!" उसके उत्पादक ब्रिगेड में यह एक महत्वपूर्ण समाचार बन गया। "क्रांति को जीवन में उतारो" का उपदेश सुनते-सुनते थके लोगों को गुटबन्दी की लड़ाई से थोड़ी फुर्सत मिली और उन सबने "दक्षिणपंथी तत्व" के प्रति सहानुभूति प्रकट की। वह किसी भी गुट में नहीं था; उसने कभी किसी को क्षति नहीं पहुंचाई थी और केवल "उत्पादन बढ़ाने" की बाबत ही सोचता था। मनुष्य आखिरकार अच्छे स्वभाव का होता है, दूसरों के स्नेह और प्रेम के बदले में लिङच्युन ने भी अपना प्रेम व्यक्त किया।

किसी ने खाना पकाने के बर्तन दिए, किसी ने अनाज और कुछ ने कपड़े खरीदने का कूपन भेंट किया। एक पशुचिकित्सक ने तो सभी पड़ोसी घरों से पांच-पांच च्याओ का चंदा लिया और लिङच्युन को भेंट किया। यहां तक कि "सांस्कृतिक क्रांति" के आरंभ के बाद पहली बार पार्टी शाखा की एक सभा में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया — नियम

के अनुसार नवदंपति को दी जाने वाली तीन दिन की छुट्टी लिङच्युन को दी गई। उस अंधेरे दौर में भी लोग आखिरकार अच्छे थे!

दूसरों की सहायता और सहानुभूति पर निर्भर रहकर नवदंपति ने घर बसाना आरंभ किया।

श्यूचि आरंभ से ही आशावादी और परिश्रमी महिला थी। वह गांव के पास के कस्बे के प्राइमरी स्कूल में दो वर्ष तक पढ़ी थी और काव्यात्मक भाषा में जीवन के अपने अनुभवों को व्यक्त नहीं कर सकती थी। उसके लिङच्युन के घर आने के दूसरे दिन शाम को सिनेमा ब्रिगेड ने "१९१८ में लेनिन" फिल्म अनाज सुखाने के अहाते में दिखाई थी। उसी दिन से सिनेमा में बोली गई एक पंक्ति उसकी जबान पर चढ़ गई, "यदि हमें रोटी मिल सकती है तो दूध भी मिलना चाहिए।" वह हमेशा मुस्कराते हुए यह पंक्ति दोहराया करती थी। पतली भौंहों और छोटी आंखों वाली श्यूचि जब हंसती थी तो ऐसा लगता था मानो दूज के दो चांद उसके चेहरे के आकाश में खिले हों। आंखों की सुंदरता गालों में पड़ने वाले गड्ढे के साथ मिलकर श्यूचि का विशेष सौंदर्य प्रकट करती थी।

लिङच्युन दिनभर घोड़ों को चराने के सिलसिले में घर से बाहर रहता था और वह हर दिन दोपहर की तेज धूप में मिट्टी के लौंदे से कच्ची ईंटें बनाकर सुखाती थी। फिर उसने एक-पहिया ठेले से ईंटें ढोने का काम किया और अपने मकान के सामने एक आंगन घेरने के लिए तीन तरफ से चारदीवारी की भी जोड़ाई की। इस तरह चीन के ९६,००,००० वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में से उसने अपने उपयोग के लिए अठारह वर्ग मीटर जमीन घेर ली। उसने एक बार कहा, "मेरे गांव में हर घर के आसपास कुछ पेड़ अवश्य होते हैं। यह भी कोई घर है? दरवाजे से निकलो तो सामने खुला आकाश दिखाई पड़ता है!" इसके बाद वह जंगल से चावल के कटोरे के घेरे के जितने बड़े सफेद पॉपलर के दो पौधे ले आई। पौधे लाने में उसने आश्चर्यजनक साहस का परिचय दिया। घर लाकर उसने पौधों को घर के दोनों तरफ रोपा।

अहाता पूरी तरह से घेरने के बाद उसने कुछ पालतू जीव पाले। उसने मुर्गी, बत्तख, हंस और खरगोश पाले और जब कबूतरों को पालना आरंभ किया तो सभी उसे "सशस्त्र सेना की कमांडर" कहकर बुलाने लगे। राज्य संचालित फार्म में निजी तौर पर सुअरों को पालने की अनुमति नहीं थी, यह श्यूचि की भावी योजना को पूरी करने में सबसे बड़ी बाधक थी। रात में लिङच्युन की बगल में लेटी वह प्रायः अपना सपना सुनाती कि उसके सुअर कितने गोल-मटोल हो गए हैं।

जिस सुदूर फार्म में वे रहते थे, वह किसी जमे पानी के तालाब की तरह था। नेतृ वर्ग ने वहां न तो कभी सही नीतियों को लागू करने की कोशिश की और न ही कभी गलत नीतियों के सकारात्मक पक्षों को अपनाया। सारा दबाव केवल "पूंजीवाद के अवशेषों को नष्ट करो" पर रहता था, पर श्यूचि उनके लिए किसी जिद्दी घास की तरह चट्टान की दरार से उग आई थी। उसके पालतू जीव इतनी तेजी से बढ़े जैसे कोई जादूगर अपना करिश्मा दिखा रहा हो। "यदि हमें रोटी मिल सकती है तो हमें दूध भी मिलना चाहिए।" और सचमुच साल बीतते न बीतते उनके जीवन में महान परिवर्तन आ गया। हालांकि उन्हें अभी भी कम ही वेतन मिलता था, पर वे समृद्ध जीवन बिताने में सक्षम थे। श्यूचि में समाज की मुख्य धारा की

विपरीत दिशा में जाने की पर्याप्त क्षमता थी। दूसरे लोग जब कि कम्युनिज्म में संक्रमण का शोर मचा रहे थे, उसने अपने अहाते में प्राकृतिक अर्थव्यवस्था के लिए बाजार की अर्थव्यवस्था को पुनर्स्थापित किया। श्यूचि ने अपने हाथों से सब कुछ तैयार किया था। वह जब काम से घर लौटती थी तो मुर्गी, बत्तख, हंस और कबूतर उसके पीछे-पीछे लौटते थे। नन्हीं बेटी छिङछिङ उसकी पीठ पर बंधी होती थी, कदमों के आगे-पीछे मुर्गी, बत्तख, हंस और कंधे पर कबूतर बैठा होता था। लकड़ी और पुआल से उसका चूल्हा सुलगता रहा और लोहे की देगची में पानी उबलता रहा। हालांकि श्यूचि ने कभी "कार्य विधि अनुसन्धान" नहीं पढ़ा था, पर वह हर काम बड़े संयत और व्यवस्थित तरीके से करती थी, मानो वह सहस्रबुद्ध हो।

कभी शकरकंद के सहारे जीवित रहने वाली औरत ने लिङच्युन की जिंदगी में ऐसी खुशी ला दी, जिसे उसने इसके पहले कभी महसूस नहीं किया था। श्यूचि के प्रेम ने उसकी जिंदगी की जड़ें वहां की जमीन में और गहराई तक पहुंचा दीं; इन जड़ों को खाद-पानी उनका श्रम देता था। शादी ने उस जगह के प्रति लिङच्युन के प्रेम को बढ़ाया और उसे शारीरिक श्रम करने वाले व्यक्ति की सादगी, शुद्धता और उपयुक्तता की स्पष्ट समझदारी दी। वर्षों से जिस खुशी और संतोष की तलाश में वह बेहाल था, वह उसे मिल गई थी।

जिस दिन उपनिदेशक तुङ ने दोषारोपण से लिङच्युन की मुक्ति की घोषणा की और जरूरी कागजात पर हस्ताक्षर किए, उसी दिन लिङच्युन नयी नीति के निर्देशों के अनुसार वित्त विभाग से मिला पांच सौ य्वान का अनुदान घर ले आया। जब उसने श्यूचि को आरंभ से अंत तक सारा किस्सा सुनाया, तो उसकी आंखें आश्चर्य में खुली रह गईं। अपने गंदे हाथों को एप्रन से पोंछकर उसने ताजा नोटों की गिनती की।

"श्यूचि, अब हम भी दूसरों की तरह जी सकेंगे!" कमरे में हाथ-मुंह धोते हुए लिङच्युन ने कहा। श्यूचि अभी तक खाने की मेज के आसपास मंडरा रही थी। वह बहुत खुश थी। लिङच्युन ने फिर से कहा, "तुम कुछ बोल क्यों नहीं रही हो? क्या तुम्हारी जीभ को बिल्ली खा गई है?"

"कैसे संभालकर रखोगे इन्हें?" श्यूचि ने मुस्कराकर कहा। "ये कितने ज्यादा हैं, मैं तब से गिने जा रही हूं और ये..."

"अब बस भी करो! तुम तो... यों पैसे की कीमत भी क्या है? सबसे खुशी की बात यह है कि मेरे ऊपर लगा राजनीतिक दाग मिट गया..."

"राजनीतिक दाग मिट गया, मेरी बला से! मेरे विचार से तुम आज भी वही पुराने लिङच्युन हो। वे तुम्हें दक्षिणपंथी कहते रहे और आधी जिंदगी के बाद उन्होंने स्वीकार किया कि उनसे गलती हुई; अपनी गलती स्वीकार करने के बाद भी उन्होंने तुमसे कहा कि आगे से और कोई गलती न करना! पहले हमें दोषी ठहराया गया और आगे भी ठहराया जा सकता है! इसलिए इससे फर्क नहीं पड़ता। अब हमें पैसे मिले हैं, हम अपने आराम की कुछ चीजें खरीदेंगे। मुझे इस तरह तंग मत करो... जरा मुझे पहले इनकी गिनती कर लेने दो।"

हां, उससे पंद्रह साल छोटी पत्नी ने उसे कभी किसी दूसरे से भिन्न किस्म का नहीं समझा। वह गांव की साधारण महिला थी। वह दक्षिणपंथी है या नहीं, इस पर बहस करने के लिए

दक्षिणपंथी होने का मतलब मालूम होना चाहिए था, यह बात उसके छोटे दिमाग में कभी नहीं घुसी। वह केवल इतना जानती थी कि वह अच्छा और ईमानदार आदमी है... और यही उसके लिए काफी था। काम के समय वह प्रायः अपने साथ काम करने वाली औरतों से इस संबध में बताती, "छिङछिङ के पापा बड़े अच्छे हैं, कोई लाख बुरा करे, वह कुछ नहीं बोलेंगे। ...कोई उन्हें तीन लात लगा जाए, तब भी चूं तक नहीं करेंगे। यहां तक कि भेड़िया भी उनका पीछा कर रहा हो तो उन्हें फिक्र नहीं होती। यदि ऐसे आदमी का कोई नाजायज फायदा उठाता है तो वह पाप करता है, निश्चित ही उसकी आने वाली पीढ़ी को इसका फल भुगतना पड़ेगा।"

हां, श्यूचि को पैसों से प्रेम था, कभी-कभी किसी मौके पर पैसे न खर्च कर पाने से उसे दुख होता था। पांच सौ य्वान की छोटी रकम से भी वह इतनी संतुष्ट दिख पड़ी कि नोट गिनते समय उसकी उंगलियां कांपने लगीं और आंखों में खुशी के आंसू आ गए। मगर जब उसे पता चला कि लिङच्युन के पिता धनी "विदेशी सेठ" हैं, उसने "पैसे" का उल्लेख नहीं किया। उसने लिङच्युन से सिर्फ इतना आग्रह किया कि वह अपने पिता के लिए पांच मसालों की चाय में उबले कुछ अंडे ले जाए। वह सात वर्षीया छिङछिङ को समझाते समय हमेशा कहती, "यदि तुमने मेहनत से पैसे कमाए हों तो उन्हें खर्च करने में मजा आता है; तब तुम आराम से पैसे खर्च कर सकती हो। जब मैं नमक खरीदती हूं तो मुझे पता होता है कि अंडे बेचने से मिले पैसों से नमक खरीद रही हूं, जब मैं मिर्च खरीदती हूं तो मुझे पता होता है कि फसल काटने से मिले पैसों से मिर्च खरीद रही हूं और जब मैं तुम्हारी किताबें खरीदती हूं तो मुझे पता होता है कि अतिरिक्त काम कर मैं ये पैसे ले आई हूं..." श्यूचि बिना किसी नैतिक उपदेश या ऊंची दार्शनिक अवधारणाओं के अपनी बात कहती। फिर भी इस सहज और स्पष्ट सलाह का असर परिवार के सबसे छोटे सदस्य पर पड़ता था और वह अनेक बातें समझने लगी थी : शारीरिक श्रम उत्कृष्ट कार्य है; केवल श्रम से मिले पैसे से ही सच्ची खुशी मिलती है और शोषण से या मुफ्त में मिला पैसा अपमान है!

श्यूचि को गाना नहीं आता था। जब छिङछिङ एक महीने की हुई थी, तब तीनों काउंटी केंद्र गए थे और वहां के एकमात्र स्टूडियो में उन्होंने पूरे परिवार की तस्वीर खिंचवाई थी। आइसक्रीम बेचने वाले गलियों में घूमते हुए आवाज लगाकर अपना सामान बेच रहे थे "आइसक्रीम!" बाद में "आइसक्रीम" ही एकमात्र ऐसी लोरी थी, जो श्यूचि सुना सकती थी। छिङछिङ को सुलाते समय वह इस आवाज की नकल करने की भरपूर कोशिश करती। श्यूचि की आवाज एकरस व दूर से आती लगती थी, फिर भी छिङछिङ सो जाती थी और बगल में बैठकर पढ़ते लिङच्युन को भी वह आवाज मुग्ध कर देती थी, वह आदिम सुख महसूस करता। ऐसे क्षणों में वह शुद्ध सौंदर्य का आनंद उठाता।

पेइचिङ के वाङफूचिङ में भी आइसक्रीम बेचने वाले दिखे। पर उसे बेचने के लिए उन्होंने आवाज नहीं लगाई। वे भावहीन चेहरा लिए दूकानों में बैठे थे। कितनी विचित्र भिन्नता थी! लिङच्युन ने उस मधुर लोरी की कमी सपने की तरह महसूस की, उसने श्यूचि की आशापूर्ण

और गालों में गड्ढे पड़ने वाली मुस्कान की भी कमी महसूस की और उसकी बात "यदि हमें रोटी मिल सकती है तो हमें दूध भी मिलना चाहिए" भी याद की।

नहीं, वह शहर में नहीं रह सकता। वह तुरंत लौटना चाहता था। विपत्ति में उसकी मदद करने वाले लोग गांव में थे और अब उन्हें मदद की जरूरत थी। जिस जमीन में उसका पसीना बहा था, वह गांव में था और इस समय उसका पसीना खेतों में लहलहा रहा था। विपरीत परिस्थिति में उसका साथ निभाने वाली उसकी पत्नी गांव में थी और उसकी प्यारी बेटी भी तो वहीं थी। उसका सब कुछ गांव में था। उसकी जिंदगी की जड़ें गांव में थीं!

आखिरकार लिङच्युन लौट गया। वह अपने परिचित काउंटी केंद्र में पहुंचा। बस स्टेशन के सामने काउंटी केंद्र की एकमात्र पक्की सड़क थी, जिस पर हमेशा धूल की एक परत जमी रहती थी। हवा चलने पर सड़क की धूल दूकानों, बैंकों और डाकघर के दरवाजे के आस-पास मंडराती थी। सड़क के दूसरे किनारे रुई धुनने की मशीन अभी भी अपनी एकरूप आवाज के साथ चल रही थी, मानो उसके जाने के दिन से आज तक बंद ही नहीं हुई हो। बस स्टेशन के बाहर खमीरदार मीठा चावल, बठूरा और तरबूज के बीज बेचने वाले किसानों की भीड़ अभी तक वैसी ही थी। सड़क के दोनों तरफ पूर्व से पश्चिम तक कच्ची ईंट की झोंपड़ियां थीं, कुछ झोंपड़ियों के दरवाजे के ऊपर पुरानी शैली का नक्काशीदार सरदल लगा हुआ था। नए थिएटर का निर्माण किया जा रहा था; इसके चारों तरफ मजदूरों की भीड़ थी। वे अपने-अपने काम में व्यस्त थे।

पूरी दोपहर उसने महसूस किया कि वह पैराशूट से लटका हुआ था और अब उसके पांव ठोस जमीन पर पड़े हैं। वह इस जगह को तमाम कमियों के साथ अपनी जिंदगी की तरह प्यार करता था, जिसमें अतीत की परेशानी भी शामिल थी।

झुटपुटे के समय उसकी घोड़ागाड़ी उत्पादन ब्रिगेड से गुजरी जहां पहले वह रहा करता था। पश्चिमी पहाड़ियों से आ रही शाम के सूरज की किरणें तिरछी पड़ रही थीं, गांव और गांव के निवासी शाम की सुनहरी किरणों में नहा रहे थे। दूर से उसे अपने घर के आगे लगे सफेद पॉपलर के पेड़ ही दिखाई पड़ रहे थे। पॉपलर के पेड़ अब घर की छत से बड़े हो गए थे। दोनों पेड़ इस तरह खामोश खड़े थे जैसे तन्मय होकर उसे आता देख रहे हों।

बाड़े के जानवर शाम को घर लौट रहे थे और शायद उन्होंने लिङच्युन को पहचान लिया था। वे सड़क के दोनों किनारे खड़े होकर आंखें फाड़े उसे देख रहे थे। घोड़ागाड़ी के काफी आगे निकल जाने के बाद ही धीरे से सिर झुकाकर वे अपने बाड़े की तरफ मुड़े।

लिङच्युन का दिल उत्साह से भर गया। उसने पेइचिङ में पिता से हुई आखिरी बातचीत याद की। उस शाम दोनों आमने-सामने सोफे पर बैठे थे। सिल्क का नाइट सूट पहने पिता सोफे पर पीठ टिका कर बैठे थे, उनके चेहरे पर गहरी उदासी थी।

"तुम इतनी जल्दी जा रहे हो?" पाइप से कश लेकर धुआं छोड़ते हुए उन्होंने कहा।

"हां, परीक्षा होने वाली है, स्कूल में सारी व्यवस्था करनी होगी।"

थोड़ी देर चुप रहने के बाद उसके पिता ने कहा, "यहां आकर मैं तुमसे मिल सका, यह मेरे लिए एक खुशी का मौका था।" हालांकि उन्होंने शांत रहने की कोशिश की, पर बोलते समय उनके होंठ कांपने लगे। "तुम बहुत परिपक्व हो गए हो। शायद तुम्हारे अडिग विश्वास ने तुम्हें परिपक्व बना दिया है। दरअसल मनुष्य इसी विश्वास की खोज में रहता है। साफ कहूं, मैंने भी इस विश्वास की तलाश की, पर धर्म किसी व्यक्ति को सच्ची ..." उन्होंने थके व्यक्ति की तरह अपना एक हाथ हिलाया। विषय बदलते हुए उन्होंने आगे कहा, "पिछले वर्ष जब मैं पेरिस में था, मैंने 'मोपासां की कहानियां' पढ़ीं। उसमें एक कहानी अत्यंत दिलचस्प थी। यह राष्ट्रीय सभा के एक सदस्य और उसके बेटे के पुनर्मिलन की कहानी थी। अपने बेटे को उसने अपने युवाकाल में त्याग दिया था। वह लड़का बाद में बड़ा मूर्ख साबित हुआ। पहली बार इस कहानी को पढ़ने के बाद मैं रातभर नहीं सो सका। बाद में प्रायः तुम्हारी परेशान छवि मेरे सामने उभरती थी। अब तुम्हें देखने के बाद मेरी चिंता समाप्त हो गई है। तुमने सचमुच मुझे आश्चर्यचकित कर दिया; तुम तो एक... तुम तो एक..."

उसके पिता ने यह नहीं बताया कि लिङच्युन क्या हो गया है। फिर भी लिङच्युन ने अपने पिता की आंखों में संतोष की चमक देखी। उसने महसूस किया कि दोनों इस पुनर्मिलन और विदाई से संतुष्ट हैं। दोनों की इच्छाएं पूरी हो गईं थीं। उसके पिता की चिंता और ग्लानि समाप्त हो गई थी। लिङच्युन ने निर्णय के नाजुक मौके पर अपनी जिंदगी की समीक्षा की और जीवन से एक विशेष शिक्षा ली।

सूरज पश्चिमी पहाड़ी के पीछे छिपा था। सूर्य की अंतिम रक्तिम सुनहरी किरणें पहाड़ी के ऊपर आकाश में तैरते बहुरंगी बादलों पर पड़ रही थीं। बादलों से किरणें परावर्तित होकर पहाड़ की तलहटी में फैले घास के मैदान और गांव को आलोकित कर रही थीं। धीरे-धीरे शाम की मद्धिम किरणें शाम के झुटपुटे की गोद में समा रही थीं। स्कूल के पास आने पर उसे खेल का मैदान दिखलाई पड़ा। सुनहरी किरणों में नहाते गुलाबी फूलों के पेड़ों के बीच खेल का मैदान झील की तरह लग रहा था। शम की खुनक भरी हवा के साथ उपजी कोमल भावना ने उसे तरंगायित कर दिया।

उसने सोचा कि जब उसके पिता ने उसके अडिग विश्वास का उल्लेख किया, तब उसके पिता उसकी वर्तमान आत्मिक अवस्था को सचमुच नहीं समझ पाए थे। अनुभूतिहीन तार्किक ज्ञान खोखला होता है। कुछ पहलुओं और कुछ समय पर भावना ज्ञान से महत्वपूर्ण होती है। पिछले बीस वर्षों से अधिक समय में उसने जीवन के अनुभव से सबसे कीमती चीज शारीरिक श्रम की महत्ता हासिल की थी। सोचते-सोचते उसकी आंखों में आंसू आ गए। उसे स्वयं पर गर्व हुआ, उसने पिछले दो दशक व्यर्थ ही नहीं बिताए।

वह स्कूल के पास पहुंचा। उसके घर के सामने खड़े कुछ लोग आती घोड़ागाड़ी को देख रहे थे। श्यूचि ने सफेद एप्रन पहन रखा था। शाम की धुंधली रोशनी में उसका एप्रन तारे की तरह झिलमिला रहा था। घर के आगे खड़े लोगों ने उसे पहचान लिया और उसकी तरफ दौड़े। सबसे आगे लाल फ्रॉक में उसकी बेटी थी, उसे लगा कि उसकी तरफ लाल अंगारा आ रहा है। वह नजदीक आती जा रही थी, नजदीक... और नजदीक...